



Original Article

‘अकाल में उत्सव’ उपन्यास में अभिव्यक्त संवेदनाओं का अकाल और व्यवस्था का उत्सव

डॉ. विक्रम बाळकृष्ण वारंग

सहयोगी प्राध्यापक एवं हिंदी विभाग प्रमुख

डी.बी.जे.महाविद्यालय (स्वायत्त), चिपलून, रत्नागिरी

Manuscript ID:

IJAAR-C130359

ISSN: 2347-7075

Impact Factor – 8.141

Volume - 13

Issue - 3

January – February 2026

Pp. 299 - 303

Submitted: 05 Feb. 2026

Revised: 12 Feb. 2026

Accepted: 15 Feb. 2026

Published: 28 Feb. 2026

Corresponding Author:

डॉ. विक्रम बाळकृष्ण वारंग

Quick Response Code:



Website: <https://ijaar.co.in/>



DOI: 10.5281/zenodo.22786810

DOI Link:

<https://doi.org/10.5281/zenodo.22786810>



Creative Commons



सार:

प्रस्तुत शोध प्रपत्र महाकवि निराला की कविता ‘बादल राग’ कविता से लेकर पंकज सुबीर के उपन्यास ‘अकाल में उत्सव’ तक फैले किसान संघर्ष के अनवरत कालखंड का विश्लेषण करता है। शोध प्रपत्र का मुख्य उद्देश्य भारतीय किसान की उस भयावह स्थिति को उजागर करना है, जो ‘अन्नदाता’ कहलाने के बावजूद भी कर्ज, अभाव और सरकारी तंत्र की संवेदनहीनता के चक्रव्यूह में फँसा हुआ है। उपन्यास के प्रतिनिधि पात्र ‘रामप्रसाद’ के माध्यम से यह दर्शाया गया है कि कैसे एक स्वाभिमानी किसान प्राकृतिक आपदाओं, जैसे बेमौसम बारिश और ओलावृष्टि, के कारण अपनी फसल खो देता है और अंततः भ्रष्ट व्यवस्था की भेंट चढ़ जाता है। लेखक पंकज सुबीर ने ‘अकाल में उत्सव’ इस उपन्यास में किसानों की यातनामय-पीडादायक जिन्दगी को वास्तविकता के साथ उजागर किया गया है। ‘रामप्रसाद’ भारतीय किसान जीवन का प्रतिनिधि पात्र है। ‘रामप्रसाद’ के माध्यम से लेखक ने आम भारतीय किसान का हाल उकेरा है। उपन्यास में अकाल केवल पानी का नहीं, बल्कि संवेदनाओं का भी है। किसान को जितनी पीडा पानी के अकाल से होती है, उससे कई अधिक पीडा उसे संवेदनाओं के अकाल से होती है। संवेदनाओं का अकाल पानी के अकाल से कहीं अधिक पीडादायक है। शासन-प्रशासन, मीडिया, तथाकथित समाज सेवक आदि के संवेदनाहीन रूप का लेखक ने इस उपन्यास में परदा फाश किया है। आज का किसान खेती से मोहभंग होने के कारण मजदूर बनने या आत्महत्या करने पर विवश है, क्योंकि समाज और शासन में ‘संवेदनाओं का अकाल’ पानी के अकाल से कहीं अधिक गहरा है।

मुख्य शब्द: किसान त्रासदी, कर्ज, भ्रष्टाचार, अकाल में उत्सव, मुआवजा, मीडिया, प्रशासनिक संवेदनहीनता।

Creative Commons (CC BY-NC-SA 4.0)

This is an open access journal, and articles are distributed under the terms of the Creative Commons Attribution-NonCommercial-ShareAlike 4.0 International License (CC BY-NC-SA 4.0), which permits others to remix, adapt, and build upon the work non-commercially, provided that appropriate credit is given and that any new creations are licensed under identical terms.

How to cite this article:

डॉ. विक्रम बाळकृष्ण वारंग. (2026). ‘अकाल में उत्सव’ उपन्यास में अभिव्यक्त संवेदनाओं का अकाल और व्यवस्था का उत्सव. *International Journal of Advance and Applied Research*, 13(3), 299 - 303. <https://doi.org/10.5281/zenodo.22786810>



प्रस्तावना:

“ जीर्ण बाहू है शीर्ण शरीर ,
तुझे बुलाता कृषक अधीर,
ए विप्लव के वीर !
चूस लिया है उसका सार
हाड मात्र ही है आधार
ए जीवन के पारावार !”^१

तकरीबन सौ साल पहले महाकवि निराला जी ने अपनी कविता ‘बादल राग’ में किसान जीवन के संघर्ष को उजागर किया था। किसान जीवन भर कड़ी मेहनत करता है, फिर भी वह अभाव का जीवन जीने को मजबूर है। आजादी के पहले तथा बाद में भी किसान से जुड़े सवाल अनुत्तरीत रहे हैं। किसान हमें कहने को तो हमारे समाज का ‘अन्नदाता’ है लेकिन इस पद के पीछे अथाह संघर्ष छिपा हुआ है। किसान का पूरा जीवन प्रकृति पर अवलंबित है। कभी बेमौसम बारिश, तो कभी सुखा, और कभी तो अति गर्मी के कारण खेत जल जाते हैं। चंद पल में उसकी मेहनत मिट्टी में मिल जाती है। किसान के लिए खेती करना आज एक महंगा सौदा बन गया है। भारत के ग्राम सदियों से पिछड़े हुए हैं। ग्रामीण लोगों का प्रधान व्यवसाय खेती होता है। खेती पर ही उनका जीवन निर्भर है। और खेती बारिश पर अवलंबित रहती है। इसलिए भारी वर्षा होने पर बाढ़ के कारण और सूखा पड़ने पर खेती से उपज नहीं होती। इसके कारण खेती के उत्पादन पर काफी असर पड़ता है और उसका असर ग्रामीण जनजीवन पर होता है। प्रकृति की मार, जमींदार, सेठ, साहूकार, सरकार हर कोई उसको लूटने के लिए लालायित है। हर दिन किसान आत्महत्या की खबरें समाचार पत्र में छपती रहती हैं। फसल

का उचित दाम न मिलने के कारण खेती किसान के लिए एक मृगजल साबित हो रही है।

पंकज सुबीर का ‘अकाल में उत्सव’ उपन्यास देश के किसानों की वास्तविक और भयावह स्थिति का चित्र प्रस्तुत करता है। लेखक पंकज सुबीर ने अपने उपन्यास ‘अकाल में उत्सव’ में इसी तथ्य-वास्तविकता को उजागर किया है। उपन्यास में व्यवस्था की संवेदनहीनता पर भी करारा प्रहार किया गया है। इस उपन्यास की कथावस्तु किसान जीवन के ऊपर केंद्रित है। उपन्यास का शीर्षक ही किसान जीवन की त्रासदी को अभिव्यक्ति करने के लिए काफी है। उपन्यास की कथावस्तु में किसान जीवन की पीड़ा भी है, तो दूसरी तरफ ‘उत्सव’ भी है। उपन्यास के दो प्रमुख पात्र हैं – एक भारतीय किसान का सच्चा प्रतिनिधि पात्र के रूप में ‘रामप्रसाद’ तथा भ्रष्ट प्रशासन तंत्र का प्रतिनिधि पात्र कलेक्टर श्रीनिवास परिहार। इन दोनों की कहानी एक साथ चलती रहती है। एक मजबूर किसान रामप्रसाद की जीवन जीने की जद्दोजहद तो दूसरी ओर भ्रष्ट सरकारी प्रशासन की मनमर्जी।

‘कर्ज’ किसान के जीवन का अभिन्न हिस्सा बन चुका है। यह कहना अतिशयोक्ति न होगी कि किसान में ही पैदा होता है और कर्ज में ही मर जाता है। गाँव के अधिकांश किसान अपनी दयनीय आर्थिक दशा के कारण जमींदार, साहूकार, मुखिया के पास से कर्ज लेते हैं। मुखिया, जमींदार तो कर्ज देते हैं, परंतु किसान को गहने या खेत गिरवी रखने पड़ते हैं। रामप्रसाद कर्ज के बोझ परेशान होने के कारण अपने सब गहने बेच देता है या सेठ, महाजनों के पास गिरवी रख देता है। इस तथ्य पर प्रकाश डालते हुए लेखक पंकज सुबीर कहते हैं- “किसान के जीवन में बढ़ते दुख उसकी पत्नी के शरीर पर से घटते जेवरों से आकलित किए जा सकते हैं।”^२ कर्ज समय पर नहीं लौटाया तो वह दुगना-तीगुना हो जाता है। गरीब किसान



बेचारा अपने गहने या खेत मजबूरी वश छोड़ देना ठीक ही समझते हैं। गरीबों की गरीबी का नाजायज लाभ उठाकर जमींदार उनका आर्थिक शोषण करते हैं। उपन्यास का प्रमुख पात्र रामप्रसाद कर्ज के बोझ तले दबा हुआ है। फसल को लेकर वह रात-दिन चिंताग्रस्त रहता है। कर्ज की चिंता उसे चैन से सोने भी नहीं देती। इस समस्या पर उपन्यास का एक वाक्य दृष्टव्य है - “ हर छोटा किसान किसी न किसी का कर्जदार है, बैंक का, सोसायटी का, बिजली विभाग या सरकार का।”^३

कृषि कृषक समुदाय के जीवन यापन का एक प्रधान साधन है। कृषि की उपज के द्वारा लोगों का जीवन-यापन होता है, दूसरे शब्दों में भूमि के साथ प्रत्यक्ष संबंध ही कृषि समुदाय की विशेषता है। परंपरागत भारतीय कृषक अत्याधिक रूढ़िवादी, अंधविश्वासी, भाग्यवादी और अपनी स्थिति के प्रति निराशावादी रहे हैं। उन लोगों की यह धारणा थी कि उनकी अपनी सामाजिक, आर्थिक स्थिति स्वयं उनके भाग्य का ही परिणाम है। जिसमें भी अपने प्रयासों से कोई परिवर्तन नहीं कर सकते। रामप्रसाद को अपनी खेती से काफी उम्मीद थी। फसल अच्छी आने पर उसके सभी संकट दूर हो जाएंगे। कर्ज से मुक्ति मिलेगी। लेकिन उसके जीवन में समस्याओं का अंत नहीं है। रामप्रसाद आर्थिक तंगी के कारण बिजली के बिल का भुगतान पत्नी कमली का आखिरी बचा हुआ गहना पैरों का तोड़ा गिरवी रखकर करता है। रामप्रसाद के बहनोई राजेश की माँ बीमार होती है। उसकी सहायता के लिए रामप्रसाद अपना बचा-खुचा रूपया लिए सहायता के लिए निकल पड़ता है। बहनोई राजेश और रामप्रसाद दोनों उसे शहर के अस्पताल में ले जाते हैं। यहाँ हमें भ्रष्ट सरकारी महकमे का क्रूर चेहरा नजर आता है। अस्पताल का वार्ड-ब्याय उनको अच्छे इलाज के लिए सरकारी डॉक्टरों के निजी क्लिनिक पर जाने की सलाह

देता है। सरकारी डॉक्टरों से उचित इलाज न करने के कारण राजेश की माँ की मौत हो जाती है। रामप्रसाद अपनी अपनी बहन की सास की मौत पर नुक्ता देने के लिये पत्नी कमला के बच्चे गहनें सुनार के पास गिरवी रख कर रुपये का इंतजाम करता है। रामप्रसाद कर्ज से छूटकरा पाना चाहता है पर हर परिस्थिति में ‘कर्ज’ ही उसके काम आता है। कर्ज रामप्रसाद का पीछा नहीं छोड़ता। आलम यह है - “ फसल आती, पैसा नहीं आता नहीं आता। मुट्ठी में केवल पसीने की बूंदें रह जाती हैं।”^४

अकाल में उत्सव उपन्यास में भ्रष्टा राजनैतिक व्यवस्था पर प्रहार किया गया है। राजनेता केवल किसानों को खुश करने के लिए अलग-अलग जुमलों का प्रयोग करते हैं। समाज के हर वर्ग की तरह किसान भी महंगाई की चपेट में आया है। सरकार सब्सिडी के नाम पर महज कुछ टुकड़े फेंक कर स्वयं की पीठ थपथपाती नजर आती है। वास्तविकता यह है कि हमारी अर्थव्यवस्था दुनिया की सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था है, जिसमें हर कोई किसान के पैसों पर मजे कर रहा है। सरकार किसानों की बदहाली को लेकर जरा भी चिंतित नहीं है। किसान के फसल के न्यूनतम समर्थन मूल्य में भी कोई वृद्धि नहीं हुई है। प्रशासन के हर विभाग में भ्रष्टाचार फैला हुआ है। उसकी जड़े अब मजबूत हो गयी हैं। उपन्यास का एक पात्र एडीएम राकेश राकेश पांडे कहता है - “ तो कौन भ्रष्ट नहीं है ? किस विभाग में भ्रष्टाचार नहीं है ? एक विभाग का नाम बता दीजिए जिसमें भ्रष्टाचार नहीं हो।”^५

बेमौसम बारिश की चिंता रामप्रसाद को हर समय सताती है। उसे चिंता है कि खेत में पकी फसल सकुसशल घर आने की। पर यह फसल बारिश के कारण नष्ट हो जाती है। प्राकृतिक आपदा से सताया रामप्रसाद मदद माँगने तहसीलदार के पास जाता है। बिना रिश्ते के उसकी पीड़ा को कोई नहीं सुनता। तहसीलदार रामप्रसाद से कहता है - “ कहने से कुछ



नहीं होता है, देने से होता है। भेंट-पूजा करनी पड़ती है रिपोर्ट लिखवाने के लिए। कुछ लाया है क्या? लाया है तो दे दे, मैं ग्राम सेवक को दे दूंगा, वह ठीक से रिपोर्ट बना देंगे। वैसे नहीं बनाता है कोई भी रिपोर्ट।”^६ अकाल में उत्सव उपन्यास का प्रमुख पात्र रामप्रसाद इस भ्रष्ट प्रशासन तंत्र का शिकार होता है। बैंक मैनेजर और कुछ दलाल रामप्रसाद को बिना बताए जमीन किसान क्रेडिट कार्ड बनवाते हैं और फिर उस पर तीस हजार का कर्ज उठा लेते हैं। रामप्रसाद को इस धोखाधड़ी का पता तब चलता है जब उसे पटवारी से रेवेन्यू रिकवरी सर्टिफिकेट मिलता है। जब वह बैंक में जाता है तब उसे पता चलता है कि उसके फोटो और अंगूठे के निशान किसी दुसरे के लिए हुए हैं। इधर रामप्रसाद परिस्थिति से मजबूर हो रहा है उधर कलेक्टर श्रीराम परिहार नगर में उत्सव की तैयारियों में व्यस्त है। रामप्रसाद को घर चलाने के लिए अनेक संकटों का सामना करना पड़ता है। तहसीलदार को देने के लिए उसके पास पैसे नहीं हैं। सेठ, साहुकार, प्रशासन के अधिकारी सब मिलकर किसान को लुटने का काम ही करती है। उपन्यास में लेखक कहता है – “यह पटवारी, यह गिरदावर, यह सब सरकारी जोके हैं, जो किसान के तन पर चिपकी हुई उसका खून चूस रही है। क्या इन कलेक्टरों को नहीं पता कि इनके हाथ के नीचे क्या गन्दा खेल चलता है? सब पता होता है मगर, हर इक लूट का बस यह किस्सा होता है, लूट के माल में सबका हिस्सा होता है।”^७

टूरीजम विभाग की ओर से उत्सव मनाने के लिए आए फंड में कलेक्टर श्रीराम परिहार भ्रष्टाचार करता है। उत्सव के लिए फंड की व्यवस्था नगर निगम और शराब के ठेकेदार से किया जाता है। इस काम में सामाजिक कार्यकर्ता मोहन राठी, रमेश चौरासिया और पत्रकार राहुल वर्मा आगे रहते हैं। कलेक्टर श्रीराम परिहार के मन में किसानों के प्रति किसी भी प्रकार की सहानुभूति या हमदर्दी नहीं है। लेखक ने इन भ्रष्ट

सरकारी अधिकारियों को जोक की उपमा दी है, जो दिन-रात किसानों का खून चुसती रहती है। एक तरफ किसान अकाल की त्रासदी सहन करता दिखाई देता है तो दूसरी तरफ प्रशासन के अधिकारी उत्सव में डूबे हुए हैं। कलेक्टर श्रीराम परिहार के मन में किसानों के प्रति जरा भी हमदर्दी नहीं है। वह कहता है – “उत्सव के बाद ध्यान रखना, नो सॉफ्ट कॉर्नर फॉर दीज फार्मर्स नो मीन्स स्ट्रीकटली नो वी आर नॉट फॉर हियर फॉर ऑल फुलिश थिंग्स आय एम पेड अप ऑफ आल दीज थिंग्स।”^८

गाँव में ओलावृष्टि के कारण अनेक किसानों की फसले नष्ट हो जाती हैं। किसानों का बड़ा दल कलेक्टर ऑफिस के बाहर अपनी व्यथा कहने के लिए जाता है। इन किसानों के साथ रामप्रसाद भी शामिल रहता है। कहीं यह बड़ा मुद्दा न बन जाय, इस भय से श्रीराम परिहार राकेश पांडे को इस मामले को देखने के लिए भेजते हैं। पांडे सभी सभी किसानों को आश्वासन देकर वापस भेज देता है। दूसरे दिन पटवारी फसल के नुकसान का जायजा लेने पहुँचता है तब वह रामप्रसाद से रिश्तत की मांग करता है। अधिक मानसिक दबाव से रामप्रसाद अपना मानसिक संतुलन खो बैठता है और बाद में आत्महत्या कर लेता है। उसकी मृत्यु का समाचार पाकर पूरा जिला प्रशासन, मीडिया आदि सभी सकते में जाते हैं। अंत में सभी मिलकर रामप्रसाद को मानसिक रूप में बिमार साबित करते हैं। कथा का एक महत्वपूर्ण हिस्सा मीडिया पर केंद्रित है। जब अकाल पड़ता है, तो बड़े शहरों के पत्रकार गाँवों का रुख करते हैं। वे भुखमरी और गरीबी की 'सेल्फी' और 'फोटो' लेते हैं ताकि उनकी टीआरपी बढ़ सके। वे किसी भूखे बच्चे या रोती हुई माँ की व्यथा को संवेदना से नहीं, बल्कि एक 'प्रोडक्ट' की तरह देखते हैं। मीडिया का यह चेहरा उपन्यास को और अधिक प्रासंगिक बनाता है। उपन्यास में दिखाया गया है कि कैसे एक स्वाभिमानी किसान परिस्थितियों के आगे टूटकर मजदूर बनने



या पलायन करने पर मजबूर हो जाता है। लेखक के शब्दों में –
“छोटा किसान जब तक लड़ सकता है, तब तक किसान रहता है और फिर हारकर मजदूर बन जाता है। पहले अपने लिए मजदूरी करता था, अब दूसरों के लिए करता है।”^१

इस प्रकार हम देखते हैं कि लेखक पंकज सुबीर ने ‘अकाल में उत्सव’ इस उपन्यास में किसानों की यातनामय-पीडादायक जिन्दगी को वास्तविकता के साथ उजागर किया गया है। अब किसान का खेती से मोहभंग हो रहा है। वह अब किसान से मजदूर बनने के लिए विवश हो रहा है। प्रशासन की तरफ से भी उसे हमेशा उपेक्षा का सामना करना पड़ रहा है। परिस्थिति से तंग आकर किसान अपनी उपजाऊ जमीनें बहुराष्ट्रीय कंपनियों को बेचने को मजबूर हो रहा है। ये बहुराष्ट्रीय कंपनियाँ किसान को मजदूर बनाने को तुली हैं। ‘रामप्रसाद’ भारतीय किसान जीवन का प्रतिनिधि पात्र है। ‘रामप्रसाद’ के माध्यम से लेखक ने आम भारतीय किसान का हाल उकेरा है। हर आम भारतीय किसान अपनी पकती फसल से लगी उम्मीद बाँधे रहता है। उसीके सहारे वह सुनहरे भविष्य की कल्पना करता है। आम किसान का जीवन आज भी मौसम की मेहरबानी पर ही अवलंबित है। मौसम के उतार-चढ़ाव के साथ ही किसानों की उम्मीदों का आलेख भी ऊपर नीचे होता रहता है। उपन्यास में अकाल केवल पानी का नहीं, बल्कि संवेदनाओं का भी है। किसान को जितनी पीडा पानी के

अकाल से होती है, उससे कई अधिक पीडा उसे संवेदनाओं के अकाल से होती है। संवेदनाओं का अकाल पानी के अकाल से कहीं अधिक पीडादायक है। शासन-प्रशासन, मीडिया, तथाकथित समाज सेवक आदि के संवेदनाहीन रूप का लेखक ने इस उपन्यास में परदाफाश किया है। आज का किसान खेती से मोहभंग होने के कारण मजदूर बनने या आत्महत्या करने पर विवश है, क्योंकि समाज और शासन में ‘संवेदनाओं का अकाल’ पानी के अकाल से कहीं अधिक गहरा है।

संदर्भ सूची:

- १) निराला संचयिता, संपादक. रमेशचंद्र शाह, वाणी प्रकाशन, सं. २०१०, पृ. सं. - ४६
- २) अकाल में उत्सव, पंकज सुबीर, शिवना प्रकाशन, सिहोर, मध्य प्रदेश, पृ. सं. - ११
- ३) वही, पृ. सं. - २७
- ४) वही, पृ. सं. - १०
- ५) वही, पृ. सं. - १७२
- ६) वही, पृ. सं. - २०३
- ७) वही, पृ. सं. - १७९
- ८) वही, पृ. सं. - १५५
- ९) वही, पृ. सं. - ०८